सम्पादकीय

देश - विदेश

राष्ट्रीय

लोकतांत्रिक प्रशासन प्रणाली का अतीत, वर्तमान और भविष्य

प्राचीन विश्व इतिहास में जिन पसंदीदा विषयों के इर्द-गिर्द कहानियां बुनी गई हैं, वे हैं- राजमुकुट, सिंहासन, सिंहासन के लिए युद्ध और राजसी शान-शौकत वाले जीवन के पहलू। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को देख लें- हमेशा किसी न किसी राजसिक कथा से भरपूर। वैदिक युग या प्राचीन दुनिया में प्रशासन की पद्धति राजतंत्र थी जिसमें जमींदार, जागीरदार, सूबेदार, राजा, महाराजा, सम्राट, चक्रवर्ती सम्राट- जैसे विभिन्न स्तर के पद थे। आखिरी पद- चक्रवर्ती सम्राट- तक पहुँचने के लिए आसपास के छोटे राज्यों में घुसपैठ कर सेना के साथ घोड़ा दौड़ाया जाता था। उस घोड़े को शांतिपूर्ण तरीके से अपने राज्य से गुजरने देना आक्रमणकारी राजा की अधीनता को स्वीकार करना था। जो राजा अपनी सीमा में घोड़े को रोकता था, उसे घोड़े की रक्षक सेना से युद्ध करना पड़ता था। प्राचीन भारत में सभी लोग राजा को भगवान का रूप और अपने उद्धारकर्ता के रूप में मानते थे और राजतंत्र की छत्रछाया में रहने को इच्छुक (या विवश) होते थे। उन दिनों कहीं भी लोकतंत्र या प्रजातंत्र जैसा जनता की आवाज बुलंद करने का जरिया मौजूद नहीं था।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, भारत में वैशाली गणराज्य (अब बिहार राज्य का अंश) था जिसके महाजनपद थे- वज्जि (राजधानी- वैशाली), कोसल (राजधानी- श्रावस्ती), काशी (राजधानी- वाराणसी), मगध (राजधानी- पाटलिपुत्र)। वैशाली गणराज्य प्राचीन विश्व इतिहास में अबतक उपलब्ध लोकतंत्र का प्रथम निशान था। वैशाली पर राजगृह के शक्तिशाली सम्राट अजातशत्रु ने हमला किया और जीत लिया। उसी शताब्दी में यूरोप के प्राचीन एथेंस शहर-राज्य ने सभी जमींदारों को विधान सभा में बोलने की अनुमति दी, जिससे भविष्य में लोकतंत्रों का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि लोकतंत्र आधुनिक समय और सभ्यता के विकास की देन है। भारतीय संदर्भ में चार युगों में अंतिम युग कलियुग की एक प्रभावशाली उपलब्धि लोकतंत्र को माना जा सकता है। लोकतंत्र की धारणा राजतंत्र या तानाशाही और कुलीनतंत्र की धारणा के विपरीत है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जनता के विचारों के आदान-प्रदान के कारण लोकतंत्र को शासन की सर्वोत्तम व्यवस्था कहा जाता है। लोकतंत्र में जनता अपने शासक का समय-समय पर चुनाव करती है और चुनाव के पहले भावी शासक जनता से विनती करते हैं कि उन्हें ही चुना जाय। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा लोकतंत्र को अच्छी तरह से परिभाषित किया गया था-

लेकिन लोकतंत्र में जन-प्रतिनिधि चुनने का निर्णय एक गंभीर विषय है और इसके लिए स्वतंत्र रूप से सोचनेवाला सक्रिय दिमाग, शिक्षा और जागरूकता की आवश्यकता है ताकि एक सही प्रतिनिधि चुना जाय जो उसके क्षेत्र का कल्याण कर सकता है। कुछ विशिष्ट तकनीकी और कानूनी मुद्दे भी हैं, जैसे- जनता की शिक्षा का अभाव। लोकतंत्र विविध प्रकार के जन-साधारण -शिक्षित-अनपढ़, गरीब-अमीर, विद्वान-मंदबुद्धि, अपराधी-संत- सभी प्रकार के वयस्क मतदाता को समान मताधिकार और प्रतिनिधि चुनने की स्वतंत्रता देता है। जन-प्रतिनिधि चुनने के लिए जनता को शैक्षणिक योग्यता की कोई आवश्यकता नहीं है।

इसी तरह, जन-प्रतिनिधि बनने के लिए भी शैक्षणिक योग्यता की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे सभी प्रकार की जनता को मतदान करने का समान अवसर मिलता है, वैसे ही सभी प्रकार के प्रतिनिधियों को भी निर्वाचित होने का समान अवसर मिलता है। जन-प्रतिनिधि बनने के लिए निर्धारित आवश्यक योग्यताएं हैं- देश की नागरिकता, वयस्क होना, स्वस्थ मानसिक स्थिति। लेकिन शिक्षा जैसी अनिवार्य योग्यता को जन-प्रतिनिधि बनने के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण नहीं माना गया है और जनप्रतिनिधियों को भी इस तरह के बंधन से मुक्त रखा गया है। वास्तव में, अंगूठे के निशान वाला दयालु मंत्री अपने शिक्षित अधीनस्थों द्वारा बहुत उपयोगी माना जाता है। पढ़ा-लिखा और सख्त मंत्री खतरे की निशानी माना जाता है जिससे अधीनस्थ सुरक्षित दूरी बनाकर रखते हैं। लोकतंत्र का एक और मुद्दा है- मतदाता और जन-प्रतिनिधि की स्वच्छ पृष्ठभूमि का। एक मशहूर शायर इकबाल ने कहा था जम्हूरियत (लोकतंत्र) वह तर्ज़े-हुकूमत (प्रशासन का तरीका) है जिसमें इंसान को गिनते हैं, तौला नहीं करते।

अंतर्राष्ट्रीय

अमेरिकी आर्थिक नीतियां अन्य देशों को विपरीत रूप से कर सकती हैं प्रभावित

वैश्विक स्तर पर अमेरिकी डॉलर लगातार मजबूत हो रहा है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में अन्य देशों की मुद्राओं की कीमत अमेरिकी डॉलर की तुलना में गिर रही है। इससे, विशेष रूप से विभिन्न वस्तुओं का आयात करने वाले देशों में वस्तुओं के आयात के साथ मुद्रा स्फीति का भी आयात हो रहा है। इन देशों में मुद्रा स्फीति बढ़ती जा रही है और इसे नियंत्रित करने के उद्देश्य से एक बार पुन: ब्याज दरों में वृद्धि की सम्भावना भी बढ़ रही है। भारतीय रिजर्व बैंक को अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय रुपए के अवमूल्यन को रोकने के लिए भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में से लगभग 5,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर को बेचना पड़ा है जिससे भारत का विदेशी मुद्रा भंडार अपने उच्चत्तम स्तर 70,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर से घटकर 65,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर के भी नीचे आ गया है। अमेरिकी डॉलर के लगातार मजबूत होने के चलते विश्व के लगभग सभी देशों की यही स्थिति बनती हुई दिखाई दे रही है। दूसरी ओर, अमेरिका में बजटीय घाटा एवं बाजार ऋण की राशि अपने उच्चत्तम स्तर पर पहुंच गई है एवं अमेरिका को इसे नियंत्रित करने के लिए अपनी आय में वृद्धि करना एवं व्यय को घटाना आवश्यक हो गया है। परंतु, 20 जनवरी 2025 को डॉनल्ड ट्रम्प के अमेरिका के राष्ट्रपति बनते ही सम्भव है कि ट्रम्प प्रशासन द्वारा आयकर में भारी कमी की घोषणा की जाय। डॉनल्ड ट्रम्प ने अपने चुनावी भाषण में इसके बारे में इशारा भी किया था। हां, सम्भव है कि आयकर को कम करने के चलते कुल आय में होने वाली कमी की भरपाई अमेरिका द्वारा कच्चे तेल के उत्पादन में वृद्धि कर इसके निर्यात में वृद्धि एवं अमेरिका में विभिन्न वस्तुओं के अमेरिका में होने वाले आयात पर कर में वृद्धि करने के चलते कुछ हद तक हो सके। परंतु, कुल मिलाकर यदि आय में होने वाली सम्भावित कमी की भरपाई नहीं हो पाती है तो अमेरिका में बजटीय घाटा एवं बाजार ऋण की राशि में अतुलनीय वृद्धि सम्भव है। जो एक बार पुन: अमेरिका में मुद्रा स्फीति को बढ़ा सकता है और फिर से अमेरिका में ब्याज दरों में कमी के स्थान पर वृद्धि देखने को मिल सकती है।

पूरे विश्व में पूंजीवादी नीतियों के चलते मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में रखने के उद्देश्य से विभिन्न देशों द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि की घोषणा की जाती रही है। किसी भी देश में मुद्रा स्फीति की दर यदि खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि के चलते बढ़ रही है तो इसे ब्याज दरों में वृद्धि कर नियंत्रण में नहीं लाया जा सकता है। हां, खाद्य पदार्थों की बाजार में आपूर्ति बढ़ाकर जरूर मुद्रा स्फीति को तुरंत नियंत्रण में लाया जा सकता है। अत: यह मांग की तुलना में आपूर्ति सम्बंधी मुद्दा अधिक है। उत्पादों की मांग में कमी करने के उद्देश्य से बैंकों द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि की जाती है, जिससे ऋण की लागत बढ़ती है और इसके कारण अंतत: विभिन्न उत्पादों की उत्पादन लागत बढ़ती है। उत्पादन लागत के बढ़ने से इन उत्पादों की मांग बाजार में कम होती है जो अंतत: इन उत्पादों के उत्पादन में कमी का कारण भी बनती है।

सर्वस्व

धर्म-आध्यात्म

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'-

मकर संक्रांति देवताओं की मध्य रात्रि होती है

मकर संक्रांति से उत्तरायण का प्रारंभ होता है। मकर संक्रांति देवताओं की मध्य रात्रि होती है। इस संबंध में खागोलीय मान्यता है कि सूर्य के उत्तरायण होने से देवता लोग अपने दिन की ओर उन्मुख होने लगते हैं। इस वजह से इस पर्व का विशेष महत्व है। मकर राशि में सूर्य के प्रवेश पर मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है। मकर संक्रांति में 'मकर' शब्द मकर राशि को दर्शाता है जबकि 'संक्रांति' का मतलब प्रवेश करना होता है। सूर्य के धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करने के कारण ही इस पर्व को मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। मकर संक्रांति इस बार कई मायनों में विशेष है। देव गुरु बृहस्पति मकर राशि में ही विराजमान रहेंगे, इसलिए इसे एक विशेष संयोग के तौर पर देखा जा रहा है। मकर संक्रांति पर इस बार विशेष पंचग्रही संयोग बनने जा रहा है। मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर मकर राशि में सूर्य, शनि, बृहस्पति, बुध ओर चंद्रमा का गोचर रहेगा।

तिल का सेवन सेहत के लिए लाभकारी है

मकर संक्रांति के दिन सिर्फ गुड़ और तिल खाया ही नहीं जाता है। बल्कि दान भी करा जाता है। इसका दान करना अच्छा होता है। इस दिन तिल के महत्व के कारण मकर संक्रांति पर्व को तिल संक्रांति के नाम से भी जाना जाता है। शास्त्रों में षट् तिला पापनाशिनी कहा गया है, इसका आशय है कि तिल का उबटन, तिल से स्नान, तिल वाले जल का सेवन, तिल खाना, तिल का दान तथा तिल का हवन ये 6 प्रकार से तिल का सेवन मकर संक्रांति पर करना सर्वोत्तम माना गया है। पानी में तिल डालकर स्नान भी किया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो तिल का सेवन सेहत के लिए बेहद लाभकारी माना गया है।

वैज्ञानिक फायदे

तिल के सेवन से शरीर गर्म रहता है और इसके तेल से शरीर को भरपूर नमी भी मिलती है। सर्दियों में शरीर का तापमान गिर जाता है। ऐसे में हमें बाहरी तापमान से अंदरूनी तापमान को बैलेंस करना होता है। तिल और गुड़ गर्म होते हैं। इनको खाने से शरीर गर्म रहता है, तिल में कॉपर, मैग्नीशियम, टाइयोफान, आयरन, मैग्जीन, कैल्शियम, फास्फोरस, जिंक, विटामिन बी1 और रेशे प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। तिल में एंटीऑक्सीडेंट गुण भी पाए जाते हैं। यह रक्त के 'लिपिड प्रोफाइल' को भी बढ़ाता है। तिल शरीर में उपस्थित जीवाणुओं और कीटाणुओं का दमन करता है। आयुर्वेद के छह रसों में से चार रस तिल में होते हैं, तिल में एक साथ कड़वा, मधुर एवं कसैला रस पाया जाता है। ये सभी रस मनुष्य के शरीर के लिए अंत्यंत आवश्यक होते हैं। इसको सभी चीजों में खाया जा सकता है।

शनिदेव को दान

मकर संक्रांति पर सूर्य पूजन ओर पवित्र नदियों में स्नान करने की परंपरा है। गंगाजल की कुछ बूंदे पानी में डालकर स्नान कर सकते हैं इसके बाद पूजा करें आर उगते हुए सूर्य को तीन बार जल अर्पित करें। भगवान सूर्य को शनिदेव का पिता माना जाता है सूर्य और शनि दोनों ही ग्रह पराक्रमी हैं। ऐसे जब सूर्य देव मकर राशि में आते हैं तो शनि की प्रिय वस्तुओं के दान से भक्तों पर सूर्य की कृपा होती है। इस मकर संक्रांति के दिन तिल निर्मित वस्तुओं का दान शनिदेव की विशेष कृपा को घर परिवार में लाता है। मान्यता है कि इस दिन किया गया दान कई गुना होकर वापस लौटता है।

आध्यात्मिक लेख

सूर्यदेव की वैसे तो रोज ही उपासना करनी चाहिए, लेकिन इस महीने सूर्य के अर्ध्य देने का विशेष महत्व बताया गया है। ऐसा माना गया है कि पौष मास में सूर्य भगवान सर्दी से राहत देते हैं। सूर्य की किरणों से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।

पौष मास में सूर्य को अर्ध्य देने का विशेष महत्व

पौराणिक काल से ही सूर्य को देवता का दर्जा प्राप्त है। यह हम सब जानते हैं कि सूर्य हमारे जीवन के लिए कितना आवश्यक है। सिर्फ सूर्य हमें ही नहीं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मण्ड को ऊर्जा प्रदान करता है। पौष मास में सूर्य को अर्ध्य देने का विशेष महत्व बताया गया है। ये हिंदू पंचांग का दसवां महीना है। यह इस बार 28 जनवरी तक रहेगा। इस महीने से जुड़ी अनेक परंपराएं और मान्यताएं धर्म ग्रंथों में बताई गई हैं। इस महीने से जुड़ी ऐसी ही एक परंपरा है। भगवान सूर्यदेव की पूजा करना।

सूर्यदेव की वैसे तो रोज ही उपासना करनी चाहिए, लेकिन इस महीने सूर्य के अर्ध्य देने का विशेष महत्व बताया गया है। ऐसा माना गया है कि पौष मास में सूर्य भगवान सर्दी से राहत देते हैं। सूर्य की किरणों से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।

देवगुरु बृहस्पति केले के वृक्ष में विराजमान रहते हैं

सनातन धर्म में केले का वृक्ष पूजनीय माना गया है। केले का फल, तना और पत्ते हमारे पूजा विधान हैं। केले के वृक्ष में देवगुरु बृहस्पति का वास होता है। केले का पेड़ भगवान विष्णु को बहुत प्रिय है। शास्त्रों के अनुसार सात गुरुवार नियमित रूप से केले की पूजा करने से सब मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं, इसके साथ ही मांगलिक दोष वाले व्यक्ति की अगर केले के पेड़ से शादी की जाए तो उसका मांगलिक दोष दूर हो जाता है। किसी पूजा में या मांगलिक कार्यों में दरवाजों पर केले के पत्तों को लगाना बहुत शुभ होता है। विष्णु भगवान व माँ लक्ष्मी को केला चढ़ाने से घर में सुख-समृद्धि आती है। केले के वृक्ष की पूजा करने से देव गुरु प्रसन्न होते हैं। फिर अपने भक्तों के कष्ट दूर करतें हैं। केले के वृक्ष को अपने घर के गमले में भी लगा सकते हैं फिर उसकी पूजा करने में आसानी रहेगी।

वैज्ञानिक फायदे सूर्य से

पौष मास के दौरान दिन छोटे होते हैं और रातें बड़ी। इसलिए इस समय सूर्य की किरणें हमारे शरीर को निरोगी बनाए रखने के लिए जरूरी होती हैं। पौष मास में शीत ऋतु अपने चरम पर होती है। ठंड की अधिकता के कारण त्वचा से संबंधित बीमारियां होने लगती हैं। सूर्य देव को अर्ध्य देने और पूजा करने के दौरान उसकी किरणें हमारे शरीर पर पड़ती हैं। सूर्य की गर्मी के कारण त्वचा की बीमारियां होने का खतरा कम हो जाता है, साथ ही विटामिन-डी की कमी भी पूरी होती है। सूर्य को प्रतिदिन अर्ध्य देने से आंखों की रोशनी तेज होती है।